अथ कमलनेत्र स्तोत्रम्

श्री कमल नेत्र कटि पीताम्बर, अधर मुरली गिरिधरम ।

मुकुट कुण्डल कर लकुटिया, सांवरे राधे वरम् ।। १ ।।

कूल यमुना धेनु आगे, सकल गोपयन के मन हरम् ।

पीतवस्त्र गरुड़ वाहन, चरण सुख नित सागरम ।। २ ।।

करत केलि किलोल निशि दिन, कुंज भवन उजागरम ।

अजर अमर अडोल निश्चल, पुरुषोत्तम अपरा परम् ।। ३ ।।

दीनानाथ दयाल गिरिधर, कंस हिरणाकुश हरणम् ।

गल फूल माल विशाल लोचन, अधिक सुन्दर केशवम् ।। ४ ।।

बंशीधर वासुदेव छइया, बलि छल्यो श्री वामनम् ।

जब डूबते गज राख लीनों, लंक छेद्यो रावणम् ।। ५ ।।

सप्त दीप नवखण्ड चौदह, भवन कीनों एक पदम् ।

द्रोपदी की लाज राखी, कहां लौ उपमा करम् ।। ६ ।।

दीनानाथ दयाल पूरण, करुणा मय करुणा करम् ।

कवित्तदास विलास निशदिन, नाम जप नित नागरम् ।। 7 ।।

प्रथम गुरु के चरण बन्दों, यस्य ज्ञान प्रकाशितम् ।

आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा, सेविते शिव शंकरम् ।। ८ ।।

श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव, कृष्ण यदुपति केशवम् ।

श्रीराम रघुवर, राम रघुवर, राम रघुवर राघवम् ।। ९ ।।

श्रीराम कृष्ण गोविन्द माधव, वासुदेव श्री वामनम् ।

मच्छ-कच्छ वराह नरसिंह, पाहि रघुपति पावनम् ।। १० ।।

मथुरा में केशवराय विराजे, गोकुल बाल मुकुन्द जी ।

श्री वृन्दावन में मदन मोहन, गोपीनाथ गोविन्द जी ।। ११ ।।

धन्य मथुरा धन्य गोकुल, जहाँ श्री पति अवतरे ।

धन्य यमुना नीर निर्मल, ग्वाल बाल सखा वरे ।। १२ ।।

नवनीत नागर करत निरन्तर, शिव विरंचि मन मोहितम ।

कालिन्दी तट करत क्रीड़ा, बाल अदभुत सुन्दरम् ।। १३ ।।

ग्वाल बाल सब सखा विराजे, संग राधे भामिनी ।

बंशी वट तट निकट यमुना, मुरली की टेर सुहावनी ।। १४ ।।

भज राघवेश रघुवंश उत्तम, परम राजकुमार जी ।

सीता के पति भक्तन के गति, जगत् प्राण आधार जी ।। १५ ।।

जनक राजा पनक राखी, धनुष बाण चढ़ावहीं ।

सती सीता नाम जाके, श्री रामचन्द्र प्रणामहीं ।। १६ ।।

जन्म मथुरा खेल गोकुल, नन्द के ह्रदि नन्दनम ।

बाल लीला पतित पावन, देवकी वसुदेवकम ।। १७ ।।

श्रीकृष्ण कलिमल हरण जाके, जो भजे हरिचरण को ।

भक्ति अपनी देव माधव, भवसागर के तरण को ।। १८ ।।

जगन्नाथ जगदीश स्वामी, श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम् ।

द्वारिका के नाथ श्री पति, केशवं प्रणमाम्यहम् ।। १९ ।।

श्रीकृष्ण अष्टपदपढ़त निशदिन, विष्णु लोक सगच्छतम् ।

श्रीगुरु रामानन्द अवतार स्वामी, कविदत्त दास समाप्ततम् ।। २० ।।